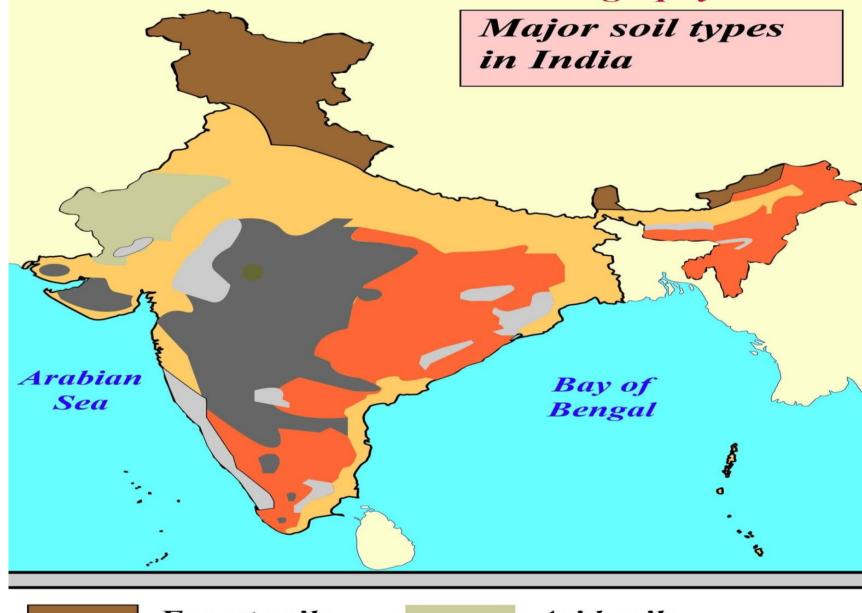
भारत में मिट्टी के प्रकार

- •भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (Indian Council of Agricultural Research-I.C.A.R.) ने भारतीय मिट्टी को 8 भागों में बांटा है-
- 1. लाल मिट्टी Red Soil
- 2. काली मिट्टी Black Soil
- 3. लैटेराइट मिट्टी Laterite Soil
- 4. क्षारयुक्त मिट्टी Saline and Alkaline Soil
- 5. हल्की काली एवं दलदली मिट्टी Peaty and Other Organic soil
- 6. रेतीली मिट्टी Arid and Desert Soil
- 7. कांप मिट्टी Alluvial Soil
- 8. वनों वाली मिट्टी Forest Soil





लाल मिट्टी में लौह मात्रा अधिक होती है और यह चना, म्ंगफली और अरण्डी के बीज की फसल के लिए उपयुक्त है।

काली मिट्टी में कैल्शियम, पौटेशियम और मैग्निशियम प्रचुर मात्रा में पाया जाता है लेकिन इसमें नाइट्रोजन की मात्रा कम होती है। कपास, तम्बाकू, मिर्च तिलहन, ज्वार, रागी और मक्के जैसी फसलें इसमें अच्छी उगती हैं।

रेतीली मिट्टी में पोषक तत्त्व कम होते हैं लेकिन यह अधिक वर्षा क्षेत्रों में नारियल, और कैजुरिना के पेड़ों के विकास में उपयोगी है

कांप मिटटी Alluvial Soil

उत्तर के विस्तृत मैदान तथा प्रायद्वीपीय भारत के तटीय मैदानों में मिलती है। यह अत्यंत ऊपजाऊ है इसे जलोढ़ या कछारीय मिट्टी भी कहा जाता है यह भारत के लगभग 43% भाग में पाई जाती है|

यह मिट्टी सतलज, गंगा, यमुना, घाघरा,गंडक, ब्रहमपुत्र और इनकी सहायक निर्देशें द्वारा लाई जाती है| इस मिट्टी में कंकड़ नहीं पाए जाते हैं। इस मिट्टी में नाइट्रोजन, फास्फोरस और वनस्पति अंशों की कमी पाई जाती है|

खादर में ये तत्व भांभर की तुलना में अधिक मात्रा में वर्तमान हैं, इसलिए खादर अधिक उपजाऊ है। भांभर में कम वर्षा के क्षेत्रों में, कहीं कहीं खारी मिट्टी ऊसर अथवा बंजर होती है। भांभर और तराई क्षेत्रों में प्रातन जलोढ़, डेल्टाई भागों नवीनतम जलोढ़, मध्य घाटी में नवीन जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है। प्रातन जलोढ़ मिट्टी के क्षेत्र को Bangar और नवीन जलोढ़ मिट्टी के क्षेत्र को खादर कहा जाता है। पूर्वी तटीय मैदानों में यह मिट्टी कृष्णा, गोदावरी, कावेरी और महानदी के डेल्टा में प्रमुख रूप से पाई जाती है| इस मिट्टी की प्रमुख फसलें खरीफ और रबी जैसे- दालें, कपास, तिलहन, गनना और गंगा-ब्रहमप्त्र घाटी में जूट प्रमुख से उगाया जाता है।

काली मिट्टी Black Soil

यह मिट्टी ज्वालामुखी से निकलने वाले लावा से बनती है| भारत में यह लगभग 5 लाख वर्ग-किमी. में फैली है|

गराम्बर में रूप पिर्टी का मुस्से अधिक विस्तार है।

महाराष्ट्र में इस मिट्टी का सबसे अधिक विस्तार है।

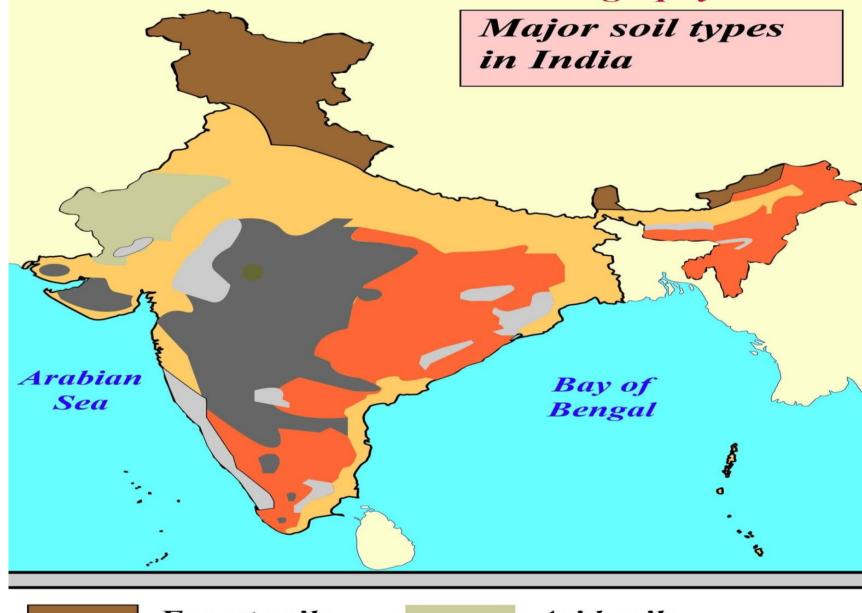
इसे दक्कन ट्रॅप से बनी मिट्टी भी कहते हैं।

इस मिट्टी में चुना, पोटॅश, मैग्निशियम, एल्यूमिना और लोहा पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है।

इसका विस्तार लावा क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि निदयों ने इसे ले जाकर अपनी घाटियों में भी जमा किया है। यह बहत ही उपजाऊ है और कपास की उपज के लिए प्रसिद्ध है इसलिए इसे कपासवाली

काली मिट्टी कहते हैं। इस मिट्टी में नमी को रोक रखने की प्रचुर शक्ति है, इसलिए वर्षा कम होने पर भी सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती।

इसका काला रंग शायद अत्यंत महीन लौह अंशों की उपस्थिति के कारण है इसकी मिट्टी की मुख्य फसल कपास है। इस मिट्टी में गन्ना, केला, ज्वार, तंबाकू, रेंड़ी, मूँगफली और सोयाबीन की भी अच्छी पैदावार होती है।





लाल मिट्टी Red Soil

यह मिट्टी अपक्षय के प्रभाव से चट्टानों के टूट-फुट से बनती है|
आयरन ऑक्साइड की अधिकता के कारण इस मिट्टी का रंग
लाल दिखता है|
यह मिट्टी प्रमुख रूप से मध्य-प्रदेश, दक्षिणी उत्तर प्रदेश, छोटा नागपुर
के पठार, आंध्र प्रदेश के दण्डकारण्य क्षेत्र, पश्चिम बंगाल और मेघालय में
पाई जाती है|

पठार तथा पहाड़ियों पर इन मिट्टियों की उर्वराशक्ति कम होती है और ये कंकरीली तथा रूखडी होती हैं, किंतु नीचे स्थानों में अथवा नदियों की घाटियों में ये दोरस हो जाती हैं और अधिक उपजाऊ हो जाती है और इनमें निक्षालन (Leaching) भी अधिक हुआ है।

तटीय मैदानों और काली मिट्टी के क्षेत्र को छोड़कर, प्रायद्वीपीय पठार के अधिकांश भाग में लाल मिट्टी पाई जाती है। इस मिट्टी में मोटे अनाज पैदा होते है जैसे गेंहू, धान, अलसी आदि।

लैटेराइट मिट्टी Laterite Soil

यह मिट्टी रासायनिक क्रियाओं तथा चट्टानो के टूट-फूट द्वारा शुष्क मौसम में बनती है। इस मिट्टी में भी आइरन ऑक्साइड की अधिकता पाई जाती है।

ऊँचे स्थलों में यह प्राय: पतली और कंकड़मिश्रित होती है और कृषि के योग्य नहीं रहती, किंतु मैदानी भागों में यह खेती के काम में लाई जाती है।

यह मिट्टी तमिलनाडु के पहाड़ी भागों, केरल, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल तथा उड़ीसा के कुछ भागों में, दक्षिण भारत में मैदानी भागों में इसपर धान की खेती होती है ऊँचे भागों में चाय, कहवा, रबर तथा सिनकोना उपजाए जाते हैं।

इस प्रकार की मिट्टी अधिक ऊष्मा और वर्षा के क्षेत्रों में बनती है। इसलिए इसमें ह्यूमस की कमी होती है और निक्षालन अधिक हुआ करता है

रेतीली मिट्टी Arid and Desert Soil

यह मिट्टी शुष्क और अर्धशुष्क प्रदेशों जैसे – पश्चिमी राजस्थान और आरवाली पर्वत के क्षेत्रों, उत्तरी गुजरात, दक्षिणी हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पाई जाती है।

सिंचाई के सहारे गेंह, गन्ना, कपास, ज्वार, बाजरा उगाये जाते हैं। जहाँ सिंचाई की सुविधा नहीं है वहाँ यह भूमि बंजर पाई जाती है।

क्षारयुक्त मिट्टी Saline and Alkaline Soil

शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्रों, दलदली क्षेत्रों, अधिक सिंचाई वाले क्षेत्रों में यह मिट्टी पाई जाती है।

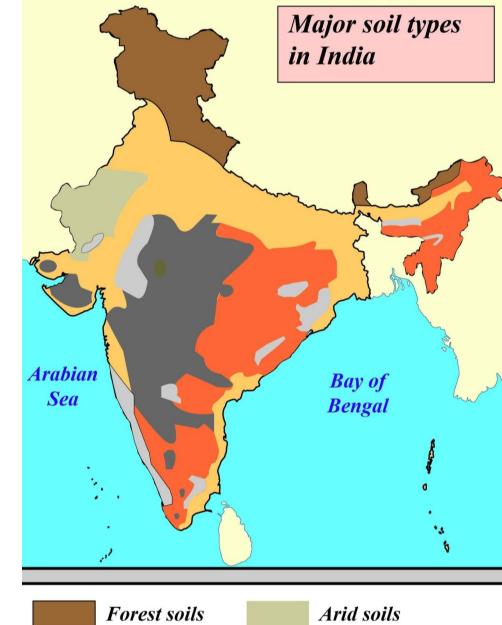
इन्हे **थूर (Thur), ऊसर, कल्लहड़, राकड़, रे** और **चोपन** के नामों से भी जाना जाता है।

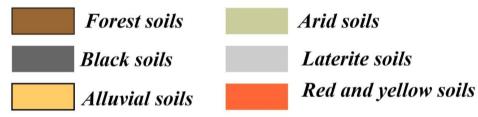
शुष्क भागों में अधिक सिंचाई के कारण एवं अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में जल-प्रवाह दोषपूर्ण होने एवं जलरेखा उपर-नीचे होने के कारण इस मिट्टी का जन्म होता है।

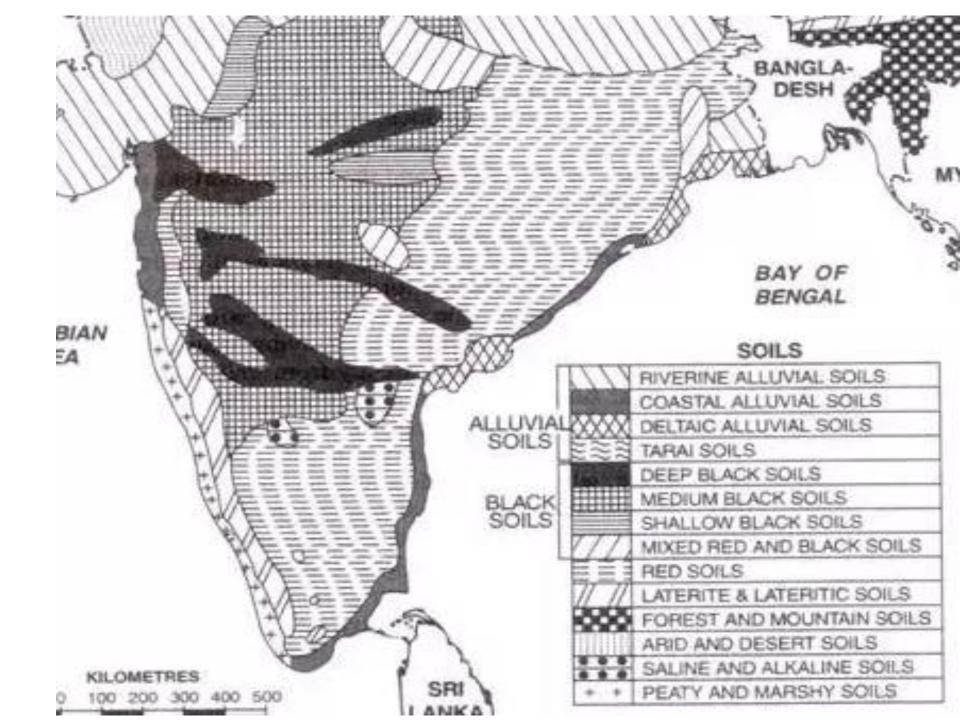
इस प्रकार की मिट्टी में भूमि की निचली परतों से क्षार या लवण वाष्पीकरण द्वारा उपरी परतों तक आ जाते हैं।

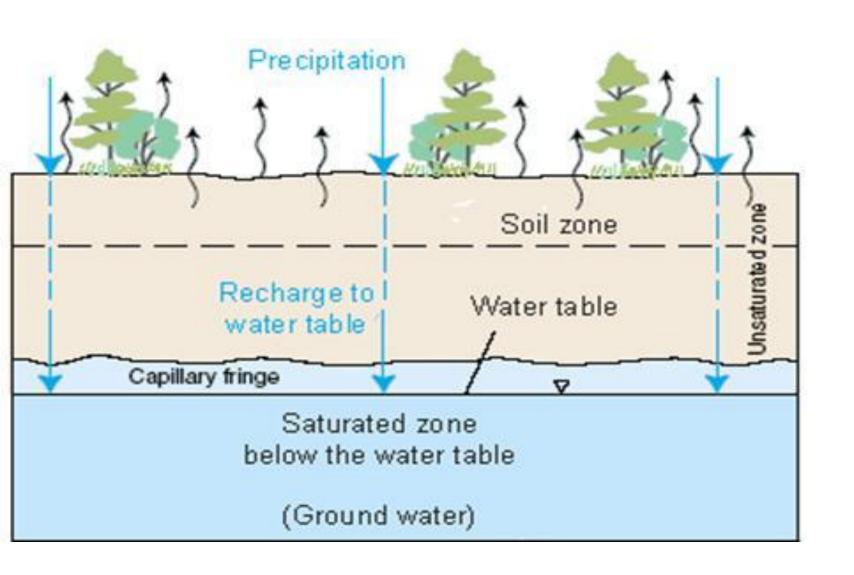
इस मिट्टी में सोडियम, केल्सियम और मेग्निशियम की मात्रा अधिक पायी जाने से प्रायः यह मिट्टी अनुत्पादक हो जाती है हल्की काली एवं दलदली
मिट्टी Peaty and Other
Organic soil
इस मिट्टी में
ज़्यादातर जैविक तत्व
अधिक मात्रा में पाए जाते
हैं।
यह सामान्यतः आद्र-प्रदेशों
में मिलती है।

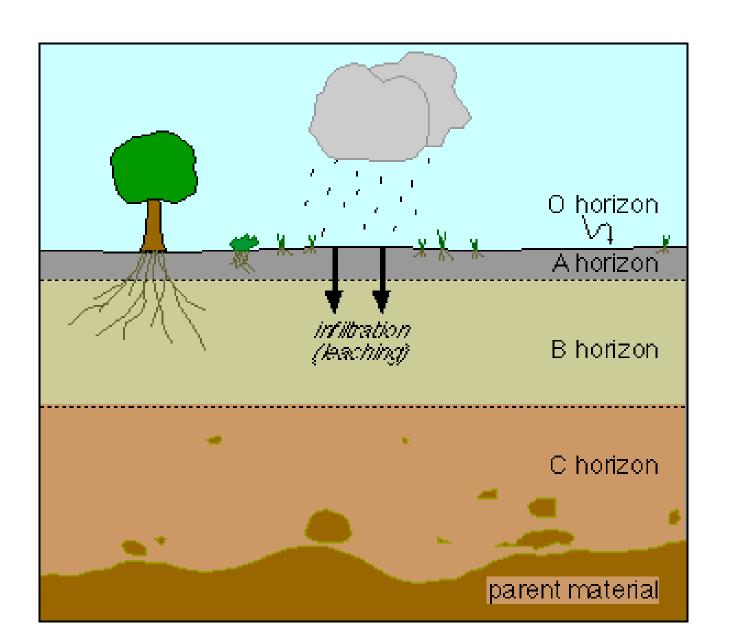
दलदली मिट्टी उड़ीसा के तटीय भागों, सुंदरवन के डेल्टाई क्षेत्रों, बिहार के मध्यवर्ती क्षेत्रों, और तमिलनाडु के दक्षिण-पूर्वी एवं केरल के तटों पर पाई जाती है।





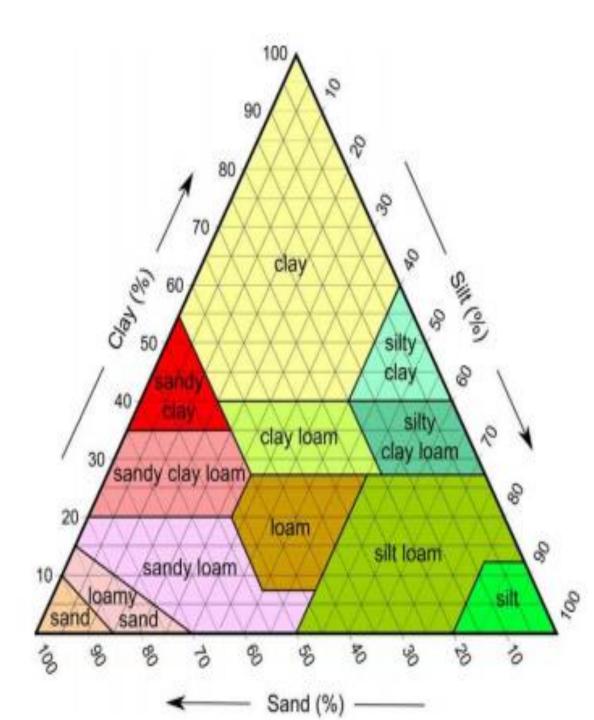






Textural triangle:

It is used to determine the soil textural name after the percentages of sand, silt, and clay are determined from a laboratory analysis.

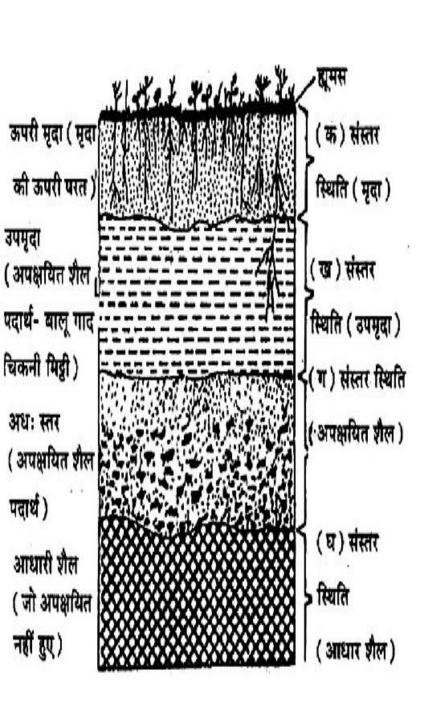


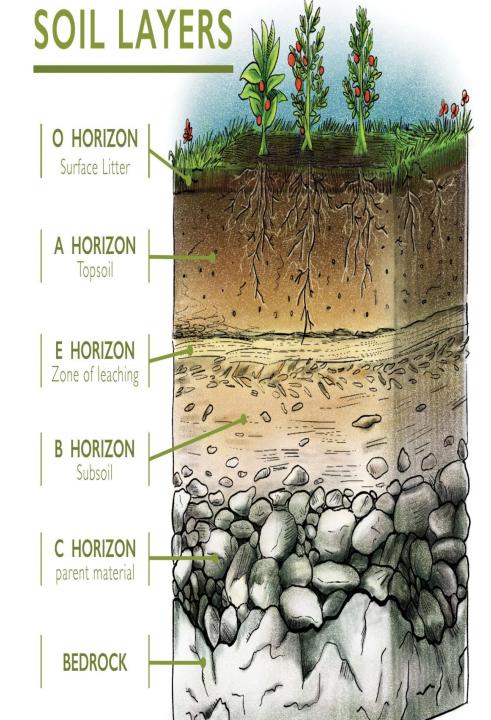
Soil Profile:

Vertical section of the matured soil shows several layers, with distinct characteristic physical and chemical properties, which are known as horizons or soil horizons. These layers or horizons from top to bottom together constitute soil profile. Each horizon has a specific thickness, structure, colour, texture

From the surface to downwards, these may be named as O-horizon, A-horizon, B-horizon, C-horizon and R-horizon. The A and B zones together form the true soil or Solum.

परिपक्व मिटटी का ऊर्ध्वाधर खंड कई परतों को दिखाता है, जिसमें विशिष्ट विशेषता भौतिक और रासायनिक गण होते हैं ये परतें या क्षितिज ऊपर से नीचे तक एक साथ मुदा प्रोफ़ाइल का गठन करते हैं। प्रत्येक क्षितिज में एक विशिष्ट मोटाई, संरचना, रंग, बनावट, होती है। सतह से नीचे की ओर. इन्हें ओ-क्षितिज, ए-क्षितिज, बी-क्षितिज, सी-क्षितिज आर-क्षितिज

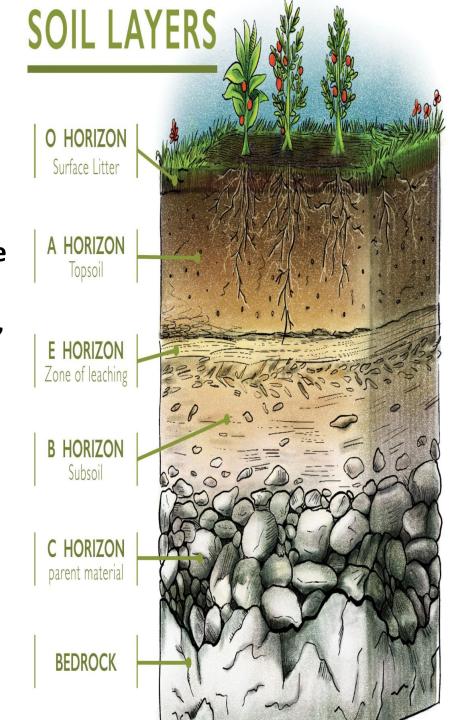




The different layers of soil are:
Topsoil
Subsoil
Parent rock

The O-Horizon

The O horizon is the upper layer of the topsoil which is mainly composed of organic materials such as dried leaves, grasses, dead leaves, small rocks, twigs, surface organisms, fallen trees, and other decomposed organic matter. It contains about 20 to 30% of organic matter. This horizon of soil is often black brown or dark brown in colour and this is mainly because of the presence of organic content.



The A-Horizon or Topsoil

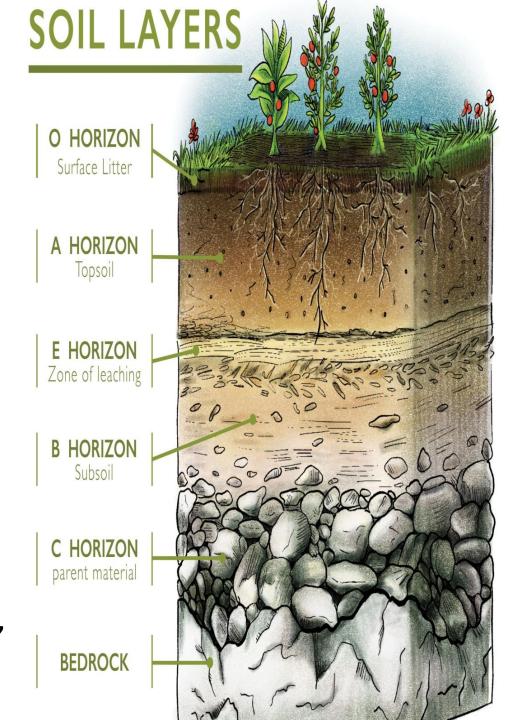
This layer is rich in organic material and is known as the humus layer.

This layer consists of both organic matter and other decomposed materials. The topsoil is soft and porous to hold enough air and water.

In this layer,

the seed germination takes place and new roots are produced which grows into a new plant.

This layer consists of microorganisms such as earthworms, fungi, bacteria, etc.



The E-Horizon
This layer is composed of
nutrients leached from the
O and A horizons. This layer is
more common in forested areas

The B-Horizon or Subsoil

and has lower clay content.

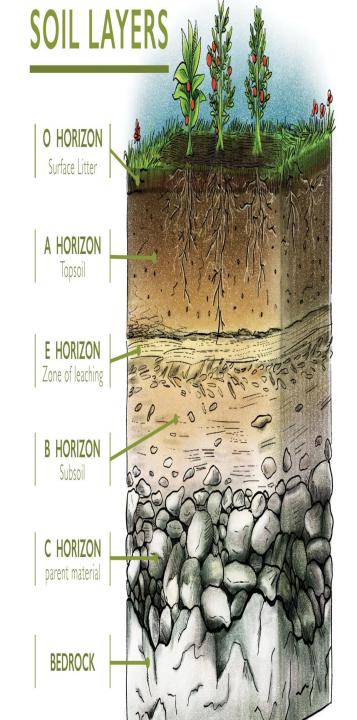
It is the subsurface horizon, present just below the topsoil and above the bedrock.

harder and compact than topsoil.

It contains less humus.

deposition of certain minerals and metal salts such as iron oxide.

This layer holds enough water than the topsoil



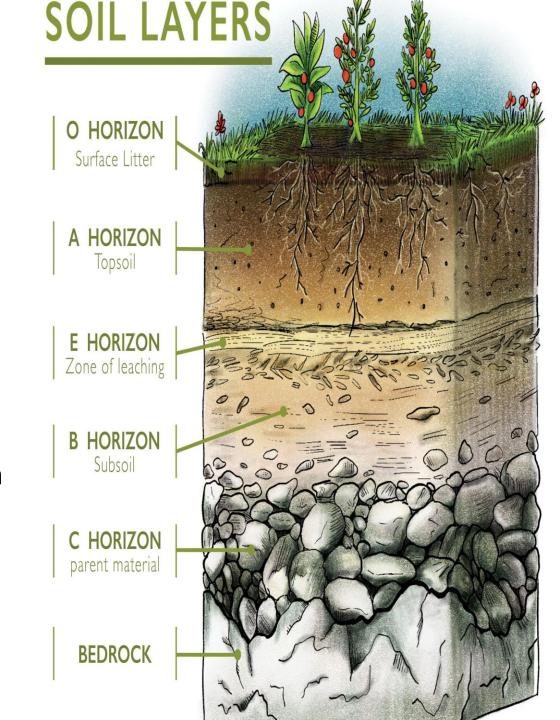
The C-Horizon

This layer is devoid of any organic matter and is made up of broken bedrock

The R-Horizon

It is a compacted and cemented layer.

Different types of rocks such as granite, basalt and limestone are found here.



Forestry in India भारत के वन

भारत के सभी राज्यों में वनों का वितरण समान रूप से नहीं हैं जिसके कई मुख्य कारण हैं-

रॉजस्थान में 3.7 प्रतिशत पंजाब में 2.7 प्रतिशत हरियाणा में 1.2 प्रतिशत तथा गुजरात में 6.1 प्रतिशत वन हैं। इन क्षेत्रों में कम वर्षा होने के कारण वन बहुत कम पाए जाते हैं। साथ ही हरियाणा तथा पंजाब में पूर्वकाल में खेती के लिये जंगलों का सफाया कर दिया गया, जिससे वन क्षेत्र में कमी आ गई।

पं. बंगाल (9.0 प्रतिशत), उ.प्र. (11.4 प्रतिशत) तथा बिहार (15.3 प्रतिशत) राज्यों में भी है। जहाँ वन भूमि अधिकाशतः कृषि भूमि में तब्दील की गई जबिक इन राज्यों के पर्वतीय क्षेत्रों में तथा बिहार के नागपुर पठारी क्षेत्र में उच्च भौगोलिक स्थिति वर्षा का अधिकता के कारण वनों की अधिकता है।

जम्मू कश्मीर (9.0 प्रतिशत) में वनों का प्रतिशत कम होने के कई कारण हैं जिसमें प्रमुख कारण कम वर्षा, तीव्र बंजर ढलान तथा बर्फ से ढकी हुई चोटियों का होना है।

महाराष्ट्र (14.3 प्रतिशत), कर्नाटक (16.8 प्रतिशत), आंध्र प्रदेश (17.2 प्रतिशत) तथा तमिलनाडु (13.6 प्रतिशत) प्रदेशों का अधिकांश भाग वृष्टिछाया प्रदेश के अन्तर्गत होने के कारण इन प्रदेशों में भी वनों की कमी है। आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु के समुद्र तटीय क्षेत्रों में जहाँ सघन वर्षा होती है वहाँ जंगलों को साफ करके खेती की भूमि में परिवर्तित कर दिया गया है।

हिमालय क्षेत्र के प्रदेशों तथा मध्य के उच्च पठारी भागों में अन्य राज्य-क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक वन पाए जाते हैं।

संघन वर्षा, उच्च भौगोलिक स्थिति तथा अन्य प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण ही मिजोरम (89.4 प्रतिशत), नागालैण्ड (86.4 प्रतिशत), अरुणाचल प्रदेश (82.1 प्रतिशत), मणिपुर (79.2 प्रतिशत), मेघालय (70.8 प्रतिशत), सिक्किम (42.8 प्रतिशत), त्रिपूरा (52.8 प्रतिशत), असम (31.3 प्रतिशत), हिमाचल प्रदेश (21.2 प्रतिशत), तथा मध्य प्रदेश (30.6 प्रतिशत) व उड़ीसा (30.3 प्रतिशत) प्रदेश में वनों का प्रतिशत सबसे अधिक है।

अध्याय 4: वन प्रकार और जैव-विविधता

(Forest Types & Biodiversity)

वनों की श्रेणी को वर्गीकृत करने के लिये चैंपियन एवं सेठ वर्गीकरण द्वारा कुल 16 प्रकारों की पहचान की गई है:

1. आर्द्र उष्णकटिबंधीय वन (Moist Tropical Forest):

उष्णकिरबंधीय नम सदाबहार वन (Tropical Wet Evergreen Forest) उष्णकिरबंधीय अर्द्ध-सदाबहार वन (Tropical Semi-Evergreen Forest) उष्णकिरबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन (Tropical Moist Deciduous Forest) वेलांचली एवं अनूप वन (Littoral and Swamp Forest)

2 शुष्क उष्णकटिबंधीय वन (Dry Tropical Forest)

उष्णकितबंधीय शुष्क पर्णपाती वन (Tropical Dry Deciduous Forest) उष्णकितबंधीय कांटेदार वन (Tropical Thorn Forest) उष्णकितबंधीय शुष्क सदाबहार वन (Tropical Dry Evergreen Forest)

3 पर्वतीय उपोष्णकदिबंधीय वन (Montane Subtropical Forest)

उपोष्णकितबंधीय पृथुपर्णी पहाड़ी वन (Montane Wet Temperate Forest) उपोष्णकितबंधीय पाइन वन (Subtropical Pine Forest) उपोष्णकितबंधीय शुष्क सदाबहार वन (Subtropical Dry Evergreen Forest)

4 पर्वतीय समशीतोष्ण वन (Montane Temperate Forest)

पर्वतीय नम समशीतोष्ण वन (Montane Wet Temperate Forest) हिमालयी आर्द्र समशीतोष्ण वन (Himalayan Moist Temperate Forest) हिमालयी शुष्क समशीतोष्ण वन (Himalayan Dry Temperate Forest)

5 उप-अल्पाइन वन (Subalpine Forest)

उप-अल्पाइन वन (Subalpine Forest)

6 अल्पाइन झाड़ियाँ (Alpine Scrub)

आर्द्र अल्पाइन झाड़ियाँ (Moist Alpine Scrub) शुष्क अल्पाइन झाड़ियाँ (Dry Alpine Scrub

उष्ण कटिबंधीय सदाबहार (TROPICAL EVERGREEN FOREST)

150 cm. से ज्यादा वर्षा तापमान 15-30° Celsius तक

उत्तर-पूर्वी भारत, पश्चिमी घाट के कुछ भागों, हिमालय के निम्नश्रेणी जैसे भाबर (foothills), अंडमान-निकोबार द्वीप समूह आदि में पाए जाते हैं

औसत वार्षिक 250 cm. से अधिक जंगल सघन पत्ते प्रतिवर्ष नियमित रूप से नहीं झड़ते और इसी के कारण ये सदाबहार वन कहलाते हैं.

इन forests में पाई जाने वाली कुछ प्रमुख प्रजातियाँ हैं – सफ़ेद देवदार, बेंत. मुली, बाँस, चपलास (chaplas), गर्जन (gurjan) आदि.

जहाँ वर्षा 200-250 cm के बीच पाई जाती है, वहाँ के forest अर्ध सदाबहार वन कहलाते हैं.

ये पश्चिम घाट, असम के ऊपरी इलाकों या हिमालय के ढालों और उड़ीसा में पाए जाते हैं.

उष्ण कटिबंधीय आद्र पर्णपाती वन (TROPICAL WET DECIDUOUS FOREST)

ये मानसूनी वन हैं. ये वन भारत के उन भागों में पाई जाती हैं जहाँ औसत वर्षा 100-200 cm. के बीच होती है. ये forest सहयाद्रि, प्रायद्वीप के उत्तर-पूर्वी भाग और हिमालय के foothills में पाए जाते हैं. इन वनों में सागवान, साल, सखुआ, खैर आदि पेड़ पाए जाते हैं जो आर्थिक रूप से काफी महत्त्वपूर्ण हैं.

Maximum deforestation of these forest due to wood based industries and local need of wood and agriculture. Now government is protecting them according to forest policy and wild life conservation act

उष्ण कटिबंधीय कटीले वन (TROPICAL THORN **FOREST)**

औसत वार्षिक वर्षा 75-100 cm. के बीच औसत तापमान 16-22° Celsius होता है. ये वन मध्य प्रदेश, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, कच्छ आदि स्थानों में पाए जाते हैं. बब्ल, पलास, काजू, खैर, जंगली ताड़ आदि इस forest में पाए जाते हैं.

शुष्क पर्णपाती वन (DRY DECIDUOUS FOREST) शुष्क पर्णपाती वन उन प्रदेशों में पाए जाते हैं जहाँ औसत वॉर्षिक वर्षा 100-150 cm. और तापमान 10-12° Celsius के बीच होता है. बब्ल, जामुन, मोदेस्ता (modesta tree), Pistache tree आदि यहाँ के प्रमुख वृक्ष हैं.

मरुस्थल वनस्पति (DESERT VEGETATION)

इस प्रदेश में औसत वार्षिक वर्षा 50 cm. से कम होती है. मरुस्थल वनस्पति अरावली के पश्चिम में राजस्थान और उत्तरी गुजरात तक फैली है.

इन प्रदेश में दैनिक और वार्षिक ताप का अंतर बहुत अधिक होता है. कैक्टस, खजूर, इस प्रदेश की प्रमुख वनस्पतियाँ हैं.

Xerophytes

डेल्टाई वन (DELTA FOREST)

निदयों के डेल्टा पर समुद्र-तट जहाँ ज्वारों के द्वारा नमी मिलती रहती है. इसलिए इन्हें Tidal forests भी कहते हैं.

ये forest बंगाल की खाड़ी के तटीय प्रदेशों में पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु और कच्छ , काठियावाड़ (गुजरात), खम्भात की खाड़ी के तटीय प्रदेशों में मैनग्रोव (mangrove) इस प्रदेश की सबसे प्रमुख वृक्ष हैं, जिसका

उपयोग ईंधन के रूप में होता है.

सुंदरवन के डेल्टा प्रदेश में सुंदरी वृक्ष पाए जाते हैं.

उपोष्ण पर्वतीय वन (HIMALAYAN SUBTROPICAL PINE FORESTS) 100-200 cm. के बीच वर्षा होती है और तापमान 15-22° Celsius के बीच होता है.

ये वन उत्तर-पश्चिम हिमालय, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश और उत्तर-पूर्वी पर्वतीय राज्यों के ढालों पर पाए जाते हैं. चीड़ (Pine) इस वन की प्रमुख वनस्पति है.

हिमालय के आद्र वन (HIMALAYAN WET FOREST)

आद्र शीतोष्ण वन उन प्रदेशों में पाए जाते हैं, जहाँ औसत ऊँचाई 1000-2000 meter के बीच होती है.

ये forest जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तरी पर्वतीय भाग, उत्तरी बंगाल में पाए जाते हैं.

यहाँ की प्रमुख वनस्पतियाँ हैं – साल, पाइन, ओक (oak), चेस्टनट

हिमालय के शुष्क शीतोष्ण वन (HIMALAYAN DRY **TEMPERATE FOREST)**

जम्मू-कश्मीर, लाहौल-स्पीति (Lahaul & Spiti), चंबा, किन्नौर (हिमाचल प्रदेश) और सिक्किम में पाए जाते हैं.

इस वन की प्रमुख किस्मों देवदार, ओक, विलो, मलबरी, ओलिव आदि वनस्पतियाँ हैं.

पर्वतीय आद्र शीतोष्ण वन (MONTANE WET **TEMPERATE FORESTS**

तापमान 12-15 के बीच होता है.

ये forest हिमालय प्रदेश में जम्मू और कश्मीर से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक 1500 मीटर से 3000 मीटर की ऊँचाई के बीच पाए जाते

इन वनों में झाड़ियाँ, लताएँ और फर्न पाए जाते हैं. देवदार, ओक, मैग्नोलिया (magnolia), चेस्टनट (chestnut), स्प्रूस (spruce tree), सिल्वर फर इसकी प्रमुख प्रजातियाँ हैं.

अल्पाइन और अर्द्ध अल्पाइन वन (ALPINE AND SEMI-ALPINE FOREST)

अल्पाइन और अर्द्ध अल्पाइन वन हिमालय के उन प्रदेशों में पाए जाते हैं, जिसकी ऊँचाई 2500-3500 मीटर के बीच होती है.

इस प्रदेश की विशेषता है – छोटे और कम ऊँचे शंकुवृक्ष. कैल, स्प्रूस, देवदारु आदि इस forest के प्रमुख वृक्ष हैं भारत वन स्थिति रिपोर्ट (ISFR) पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) के अधीन कार्यरत भारतीय वन सर्वेक्षण (Forest Survey of India- FSI) का 16वाँ द्विवार्षिक आकलन है।

वृक्षों की प्रजातियों को 16 मुख्य वर्गों में विभाजित कर उनका 'चैंपियन एवं सेठ वर्गीकरण' (Champion & Seth Classification), 1968 के आधार पर आकलन किया जाएगा

देश में वनों एवं वृक्षों से आच्छादित कुल क्षेत्रफल 8,07,276 वर्ग किमी. है जो कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 24.56% है। पर्वतीय ज़िलों में वनावरण इन ज़िलों के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 40.30% है। देश के 140 पर्वतीय ज़िलों में 544 वर्ग किमी. (0.19%) की वृद्धि हुई है।

जनजातीय ज़िलों में कुल वन क्षेत्र इन ज़िलों के भौगोलिक क्षेत्र का 37.54% है।

उत्तर पूर्वी क्षेत्र में कुल वन क्षेत्र इनके भौगोलिक क्षेत्र का 65.05% है। वर्तमान आकलन में इस क्षेत्र के वनावरण में 765 वर्ग किमी. (0.45%) की कमी देखी गई है।

असम और त्रिपुरा को छोड़कर, देश के सभी राज्यों के वनावरण में कमी आई

भारतीय राज्यों में गुजरात का सर्वाधिक आर्द्रभूमि क्षेत्र के अंतर्गत आता है जबकि पश्चिम बंगाल दूसरे स्थान पर है।

वैश्विक वन संसाधन आकलन (Forest Resource Assessment-FRA) के अनुसार भारत में वैश्विक वन क्षेत्रफल का 2% मौजूद है

विश्व के शीर्ष दस देशों में 10वें स्थान पर है। 20% वैश्विक वनावरण के साथ रूस इस सूची में शीर्ष

भारत में सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाले राज्य: मध्य प्रदेश> अरुणाचल प्रदेश> छत्तीसगढ़> ओडिशा> महाराष्ट्र।

सर्वाधिक वनावरण प्रतिशत वाले राज्य: मिज़ोरम (85.41%)> अरुणाचल प्रदेश (79.63%)> मेघालय (76.33%)> मणिपुर (75.46%)> नगालैंड (75.41%)

वनावरण में उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाने वाले राज्य/केंद्रशासित प्रदेश: कर्नाटक>आंध्र प्रदेश> केरल>जम्मू-कश्मीर।

वनावरण में कमी दर्शाने वाले राज्य: मणिपुर>अरुणाचल प्रदेश>मिज़ोरम। भारतीय राज्यों में गुजरात का सर्वाधिक आर्द्रभूमि क्षेत्र के अंतर्गत आता है जबिक दूसरे स्थान पर पश्चिम बंगाल है। वन क्षेत्रों के अंदर आर्द्रभूमि महत्त्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्रों का निर्माण करती है।

छोटे राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में से पुदुचेरी का सर्वाधिक आर्द्रभूमि क्षेत्र के अंतर्गत शामिल है जबिक दूसरे स्थान पर अंडमान-निकोबार है।

मैंग्रोव वनस्पति का महत्त्व मैंग्रोव में एक जिटल जड़ प्रणाली होती है जो समुद्री लहर ऊर्जा को नष्ट करने में बहुत कुशल होती है तटीय क्षेत्रों को सुनामी, तूफान एवं मृदा अपरदन से बचाती है।

वे विभिन्न मछली प्रजातियों और अन्य समुद्री जीवों के लिये एक उपजाऊ प्रजनन क्षेत्र (Breeding Ground) के रूप में कार्य करते हैं।

वे शहद, टैनिन, मोम और मछली संग्रहण पर निर्भर तटीय समुदायों के लिये आजीविका के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में कार्य करते हैं।

मैंग्रोव क्षेत्र महत्त्वपूर्ण कार्बन सिंक (Carbon Sink) के रूप में भी कार्य करते हैं।

विश्व के मैंग्रोव आवरण का लगभग 40% दक्षिण-पूर्व एशिया और दक्षिण एशिया में पाया जाता है।

राज्यों और संघशासित प्रदेशों में पश्चिम बंगाल में मैंग्रोव आवरण का उच्चतम प्रतिशत क्षेत्र मौजूद है जबिक उसके बाद गुजरात और अंडमान निकोबार द्वीप समूह का स्थान है।

मैंग्रोव आवरण में वृद्धि दिखाने वाले शीर्ष तीन राज्य हैं: गुजरात> महाराष्ट्र> ओडिशा।

भारत में मैंग्रोव आवरण 4,975 वर्ग किमी. है जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 0.15% है।

There are 50 tiger reserves spreading across 17 states (tiger reserve states) of India which is home to nearly 70% of tiger population of the world.

From 1,411 tigers in 2006, this number has increased to 1,706 in 2010 and 2,226 in 2014.

Largest Tiger Reserve in India- Nagarjunsagar-Srisailam Tiger Reserve (Andhra Pradesh, Telangana)

- Smallest Tiger Reserve in India- Bor Tiger Reserve (Maharashtra)
- A tiger reserve is demarcated on the basis of 'core-buffer strategy' which includes:
- (i) Core zone
- (ii) Buffer zone

PROJECT TIGER

It was launched in the country in the year 1973 in Palamau Tiger Reserve.

The first time project tiger was launched in 1973, at Jim Corbett National Park, Uttrakhand.

NATIONAL TIGER CONSERVATION AUTHORITY (NTCA)

It is a statutory body constituted under the Wild Life (Protection) Amendment Act, 2006.

Minister for Environment and Forests is its chairperson and Minister of State for Environment and Forests is the vice-chairperson.

Bhutan, Nepal, and Bangladesh joined hands with India to conclude 'tiger census-2018' in the subcontinent.

For 2018 census counting, NTCA has developed an android app named M-STrIPES

The Bhoramdev Tiger Reserve when finally approved will be the 51st 'Tiger Reserve' in the country. Chhattisgarh

No tigers were found in Buxa (West Bengal), Dampa (Mizoram) and Palamau (Jharkhand), Tiger Reserves in India as notified under the Wildlife (Protection) Act, 1972 and amended in 2006.



